HIN3B18b

महादेवी वर्मा (१९०७-१९८७)

१ - स्मृति

विस्मृति तिमिर में दीप हो
भवितव्य का उपहार हो ;
बीते हुए का स्वप्न हो
मानव हृदय का सार हो ।

तुम सान्त्वना हो दैव की
तुम भाग्य का वरदान हो ;
टूटी हुई झंकार हो
गत काल की मुस्कान हो ।

उस लोक का संदेश हो
इस लोक का इतिहास हो ;
भूले हुए का चित्र हो
सोयी व्यथा का हास हो ।

अस्थिर चपल संसार में
तुम हो प्रदर्शक संगिनी ;
निस्सार मानस कोष में
हो मञ्जु हीरक की कनी ।

दुर्दैव ने उर पर हमारे
चित्र जो अंकित किए ;
देकर सजीला रंग तुमने
सर्वदा रञ्जित किए ।

तुम हो सुधाधारा सदा
सूखे हुए अनुराग को ;
तुम जन्म देती हो सखी !
आसक्ति को वैराग्य को ।

तेरे बिना संसार में
मानव हृदय स्मशान है ;
तेरे बिना हे संगिनी !
अनुराग का क्या मान है ?

२ - < नीहार (दो)

मैं अनन्त पथ में लिखती जो
सस्मित सपनों की बातें,
उनको कभी न धो पायेंगी
अपने आँसू से रातें !

तारों में प्रतिबिम्बित हो
मुस्कायेंगी अनन्त आँखें,
होकर सीमाहीन, शून्य में
मँडरायेंगी अभिलाषें !

उड़-उड़ कर जो धूल करेगी
मेघों का नभ में अभिषेक,
अमिट रहेगी उसके अंचल-
में मेरी पीड़ा की रेख !

वीणा होगी मूक बजाने-
वाला होगा अन्तर्धान,
विस्मृति के चरणों पर आकर
लौटेंगे सौ सौ निर्वाण !

जब असीम से हो जायेगा
मेरी लघु सीमा का मेल,
देखोगे तुम देव ! अमरता
खेलेगी मिटने का खेल !

सुभद्रा कुमारी चौहान (१९०४-१९४८)

१ - जलियाँवाले बाग़ में वसंत

यहाँ कोकिला नहीं, काक हें शोर मचाते ।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते ॥
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से ।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे ॥

परिमल-हीन पराग दाग़-सा बना पड़ा है ।
हा ! यह प्यारा बाग़ खून से सना पड़ा है ॥
आओ प्रिय ऋतुराज ! किन्तु धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना ॥

वायु चले पर मन्द चाल से उसे चलाना ।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना ॥

कोकिल गावे, किन्तु राग रोने का गावे ।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे ॥

लाना सँग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले ।
हो सुगन्ध भी मन्द, ओस से कुछ-कुछ गीले ॥
किन्तु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना ।
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना ॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ॥
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
अपने प्रिय-परिवार देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ॥
तड़प-तड़पकर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किन्तु
बहुत धीरे-से आना ।
यह है शोक-स्थान
यहाँ मत शोर मचाना ॥

२ - बिदा

"गिरफ़्तार होने वाले हैं,
आता है वारंट अभी ।"
धक्-सा हुआ हृदय, मैं सहमी
हुए विकल आशंक सभी ॥

किन्तु सामने दीख पड़े
मुस्कुरा रहे थे खड़े-खड़े ।
रुके नहीं, आँखों से आँसू
सहसा टपके बड़े-बड़े ॥

"पगली, यों ही दूर करेगी
माता का यह रौरव कष्ट ?"
रुका वेग भावों का, दीखा
अहा ! मुझे यह गौरव स्पष्ट ॥

तिलक, लाजपत, गाँधीजी भी
बन्दी कितनी बार हुए ।
जेल गये जनता ने पूजा,
संकट में अवतार हुए ॥

जेल ! हमारे महमोहन का
प्यारा पावन जन्म-स्थान !

तुझको सदा तीर्थ मानेगा
कृष्ण-भक्त यह हिन्दुस्थान ॥

मैं पुलकित हो उठी ! यहाँ भी
आज गिरफ़्तारी होगी ।
फिर जी धड़का, क्या भैया की
सचमुच तैयारी होगी ॥

आँसू छलके, याद आ गयी,
राजपूत की वह बाला ।
जिसने बिदा किया भाई को
देकर तिलक और माला ॥

सदियों सोयी हुई वीरता
जागी, मैं भी वीर बनी ।
जाओ भैया, बिदा तुम्हें
करती हूँ मैं गम्भीर बनी ॥

याद भूल जाना मेरी
उस आँसूवाली मुद्रा की ।
कर लो अब स्वीकार बधाई
छोटी बहिन "सुभद्रा" की ॥

३ - ठुकरा दो या प्यार करो

देव ! तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं ।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे, कई रंग की लाते हैं ॥
धूमधाम से, साज़बाज़ से, वे मन्दिर में आते हैं ।
मुक्ता-मणि बहुमूल्य वस्तुएँ, लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं ॥
मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी, जो कुछ साथ नहीं लायी ।
फिर भी साहस कर मन्दिर में, पूजा करने को आयी ॥
धूम-दीप-नैवेद्य नहीं है, झाँकी का शृंगार नहीं ।
हाय ! गले में पहनाने को, फूलों का भी हार नहीं ॥
स्तुति मैं कैसे करूँ कि स्वर में मेरे है माधुर्य नहीं ।
मन का भाव प्रकट करने को, मुझमें है चातुर्य नहीं ॥
नहीं दान है नहीं दक्षिणा, ख़ाली हाथ चली आयी ।
पूजा की विधि नहीं जानती फिर भी नाथ ! चली आयी ॥
पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो ।
दान दक्षिणा और निछावर, इसी भिखारिन को समझो ॥
मैं उन्मत्त प्रेम का लोभी, हृदय दिखाने आई हूँ ।
जो कुछ है वह यही पास है, इसे चढ़ाने आई हूँ ॥
चरणों पर अर्पण है, इसको चाहो तो स्वीकार करो ।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो ॥